International Journal of Leading Research Publication (IJLRP)

E-ISSN: 2582-8010 ● Website: www.ijlrp.com ● Email: editor@ijlrp.com

सांदीपनि आश्रम : प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली में एक औचित्यपूर्ण अध्ययन

शोधार्थी - ज्योति यादव [1]

शोध निर्देशक - डॉ. प्रशांत पुराणिक [2]

शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, उज्जैन

सारांश –

प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली में सांदीपनि आश्रम (उज्जैन) का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह न केवल एक धार्मिक स्थल है, बल्कि प्राचीन भारत के "गुरुकुल" मॉडल का एक आदर्श उदाहरण भी है। प्राचीन काल में उज्जैन (अवंतिका) विद्या और संस्कृति का एक प्रतिष्ठित केंद्र था। महाभारत काल के दौरान, महर्षि सांदीपनि का आश्रम एक प्रमुख शैक्षणिक संस्थान था, जहाँ भगवान श्रीकृष्ण, बलराम और सुदामा ने शिक्षा प्राप्त की थी। यहाँ की शिक्षा 'गुरु-शिष्य परंपरा' पर आधारित थी, जो व्यक्तिगत मार्गदर्शन, आत्म-अनुशासन और व्यावहारिक शिक्षा पर बल देती थी। सांदीपनि आश्रम में केवल धार्मिक ही नहीं, बल्कि सर्वांगीण विकास हेतु शिक्षा दी जाती थी। श्रीकृष्ण ने यहाँ मात्र 64 दिनों में 64 कलाएँ सीखीं, जिनमें वेद, शास्त्र, धनुर्विद्या (युद्ध कौशल), चिकित्सा, संगीत, चित्रकला, खगोल विज्ञान और यहाँ तक कि हाथी-घोड़ों को प्रशिक्षित करना भी शामिल था। ऐतिहासिक उल्लेखों के अनुसार, श्रीकृष्ण ने 4 दिनों में 4 वेद, 6 दिनों में 6 शास्त्र, 18 दिनों में 18 पुराण और 20 दिनों में गीता का ज्ञान प्राप्त किया था। शिक्षा की पद्धति 'तपोवन' शैली पर आधारित थी, जहाँ छात्र प्रकृति के समीप रहकर सादा जीवन और उच्च विचार का पालन करते थे। आश्रम में राजकुमार (कृष्ण-बलराम) और एक निर्धन ब्राह्मण पुत्र (सुदामा) को एकसमान शिक्षा और सुविधाएं प्राप्त थीं, जो शिक्षा की निष्पक्षता को दर्शाती है।

मूलशब्द - महर्षि सांदीपनि, कृष्ण सुदामा, गुरुकुल, उज्जैन, 'ज्ञानार्थ प्रवेश, धार्मिक, शैक्षणिक संस्थान, अनुशासन

1. प्रस्तावना :-

भारतीय संस्कृति में गुरु-शिष्य परंपरा का अत्यंत महत्व रहा है। शिक्षा केवल अक्षर ज्ञान नहीं, बल्कि चरित्र, संस्कृति, शील और कर्मयोग की शिक्षा भी रही है। गुरु सेवा और सेवा भाव: 'ज्ञानार्थ प्रवेश, सेवार्थ प्रस्थान' के सिद्धांत पर चलते हुए विद्यार्थी गुरु की सेवा और आश्रम के कार्यों (जैसे पशु सेवा, यज्ञ वेदी की रक्षा) के माध्यम से विनम्रता और नैतिकता सीखते थे। सांदीपनि आश्रम का मॉडल यह सिद्ध करता है कि प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली अत्यंत कुशल और समय-बद्ध (Time-tested) थी। यह प्रणाली न

केवल बौद्धिक क्षमता बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित करती थी, बल्कि चरित्र निर्माण और आध्यात्मिक उत्थान के माध्यम से समाज को निस्वार्थ नागरिक प्रदान करने के उद्देश्य से संचालित थी। पंडित सूर्यनारायण व्यास के अनुसार उज्जयिनी प्राचीन काल से ही विद्या और गुरुकुल परम्परा का केंद्र रही है , जहां संदीपनी आश्रम जैसी संस्थाओं ने वैदिक शिक्षा को समृद्ध किया है ।

ऐसे ही गुरुकुलों में एक प्रमुख नाम सांदीपनि आश्रम का है। यह आश्रम उज्जैन (मध्यप्रदेश) में स्थित है और पौराणिक कथाओं के अनुसार यही वह स्थान है जहाँ भगवान श्रीकृष्ण तथा उनके मित्र सुदामा ने शिक्षा ग्रहण की थी। इस शोध का उद्देश्य सांदीपनि आश्रम की ऐतिहासिकता, पारंपरिक मान्यता तथा आधुनिक संदर्भों का एकत्रित अध्ययन प्रस्तुत करना है। सांदीपनि आश्रम पर होने वाले शोधों की संख्या अपेक्षाकृत सीमित है। अधिकांश अध्ययनों में केवल पौराणिक दृष्टान्तों पर आधारित विवरण हैं। आधुनिक शोध में इस आश्रम की गुरुकुल प्रणाली, सामाजिक भूमिका, सांस्कृतिक विरासत तथा स्थानिक इतिहास का समुचित विश्लेषण अपेक्षित है । अतः यह शोध अक्षरज्ञान से परे सामाजिक और सांस्कृतिक विमर्श भी प्रस्तुत करता है।

➢ शोध के उद्देश्य :-

1. सांदीपनि आश्रम के माध्यम से प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली का अध्ययन करना और इसके विभिन्न पहलुओं को समझना।

2. सांदीपनि आश्रम में गुरुकुल प्रणाली का अध्ययन करना और इसके महत्व को समझना।

3. सांदीपनि आश्रम में नैतिक शिक्षा के महत्व को समझना और इसके प्रभाव को वर्तमान शिक्षा प्रणाली पर देखना।

4. सांदीपनि आश्रम में आध्यात्मिक विकास के पहलुओं का अध्ययन करना और इसके महत्व को समझना।

5. सांदीपनि आश्रम के माध्यम से प्राचीन भारतीय संस्कृति का अध्ययन करना और इसके विभिन्न पहलुओं को समझना।

6. सांदीपनि आश्रम के अध्ययन से प्राप्त ज्ञान का उपयोग वर्तमान शिक्षा प्रणाली में सुधार करने के लिए करना।

➢ साहित्य सर्वेक्षण:-

- "Ancient Educational Institutions": यह स्रोत प्राचीन भारतीय शिक्षा संस्थानों के बारे में जानकारी प्रदान करता है, जिसमें सांदीपनि आश्रम भी शामिल है।
- "प्राचीन भारतीय शिक्षा": यह स्रोत प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान करता है, जिसमें सांदीपनि आश्रम का उल्लेख है।

- "शिष्य निर्माण और राष्ट्रभक्ति की अद्वितीय मिसाल हैं आचार्य सांदीपनि": यह स्रोत आचार्य सांदीपनि और उनके आश्रम के बारे में जानकारी प्रदान करता है।
- "प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली में परम्पराएं किन स्वरूपों में विद्यमान थीं, विवेचना कीजिए": यह स्रोत प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली की परम्पराओं के बारे में जानकारी प्रदान करता है।
- "प्राचीन भारतीय शिक्षण पद्धती": यह स्रोत प्राचीन भारतीय शिक्षण पद्धति के बारे में जानकारी प्रदान करता है ।

श्रीमद्भागवत पुराण में भगवान श्रीकृष्ण के बाल्यकाल और उनके शिक्षा-काल का विस्तृत वर्णन मिलता है। पुराण में उल्लेख मिलता है कि कृष्ण, बलराम तथा सुदामा ने गुरु सांदीपनि से शिक्षा प्राप्त की थी, जिसमें 64 विद्याएँ और 16 कलाएँ भी शामिल थीं । महाभारत में गुरु-शिष्य परंपरा पर विस्तृत अध्ययन मिलता है, जिसमें गुरुकुलों की सामाजिक भूमिकाएँ तो स्पष्ट होती हैं पर विशेष रूप से सांदीपनि आश्रम का प्रत्यक्ष उल्लेख नहीं मिलता। तथापि, महाभारत की शिक्षा प्रणाली से संबंधित बोध इस शोध के सैद्धांतिक आधार को सुदृढ़ करते हैं।

स्थानीय मीडिया तथा साहित्य में सांदीपनि आश्रम के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संदर्भ को उज्जैन-स्थानिक समुदाय का गौरव बताया गया है। सरकारी पर्यटन विभाग और स्थानीय समाचार पत्रों में आश्रम के महत्व, गोमती कुंड तथा शिलालेखों का उल्लेख मिलता है। सांदीपनि आश्रम उज्जैन के पश्चिमी भाग में स्थित है, जहाँ प्राचीनकाल से एक गुरुकुल परंपरा चली आ रही है। यह आश्रम विशेष रूप से विश्वसनीय पौराणिक वर्णनों के साथ जुड़ा हुआ है और इस स्थान पर आज भी गोमती कुंड, मंदिर तथा शैक्षिक स्मारक संरक्षित हैं। यहाँ मिलने वाले शिलालेखों तथा स्थानीय परंपराओं से यह ज्ञात होता है कि यह आश्रम प्राचीन शिक्षा का केंद्र रहा है।

भारतीय गुरुकुल प्रणाली का मूल आधार गुरु-शिष्य का निष्ठापूर्ण संबंध है। गुरु न केवल पाठ्यक्रम, शास्त्र ज्ञान देते हैं, बल्कि नैतिकता, सामाजिक व्यवहार और जीवन मूल्यों को भी शिक्षित करते हैं।

संदीपानि आश्रम में वर्णित है कि यहाँ 64 विद्याएँ तथा 16 कलाएँ सिखायी जाती थीं, जो केवल धार्मिक ज्ञान नहीं, बल्कि संगीत, विज्ञान, कला, युद्ध कौशल आदि विषयों को समाहित करती थीं। ज्ञात है कि कृष्ण ने यहां 64 दिन में समस्त शिक्षा ग्रहण कर ली थी जिसमें उन्होंने 18 पुराण का ज्ञान 18 दिनों में , 4 वेदों(ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद) को 4 दिनों में, 6 शास्त्रों को 6 दिनों में, 16 कलाओं को 16 दिनों में, गीता का ज्ञान 20 दिनों में प्राप्त किया था ।

64 कलाओं (विधाओं) की सूची

नीचे उन प्रमुख विधाओं का विवरण दिया गया है जो भगवान श्रीकृष्ण ने सीखी थीं

क्रमांक	क्रमांक विधा	कला/विधा का नाम	विवरण
1.	1-4	गायन, वादन, नृत्य, नाट्य	संगीत, वाद्य यंत्र बजाना, नृत्य और अभिनय की कला
2.	5-8	चित्रकारी, लेप, साज-सज्जा	पेंटिंग करना, शरीर पर तिलक/लेप लगाना और फूलों के आभूषण बनाना
3.	9-12	जल विधाएँ	जल तरंग बजाना (Udaka-Vadya) और जल क्रीड़ा की कला
4.	13-16	वस्त्र एवं श्रृंगार	सुंदर वस्त्र पहनना, बाल संवारना और इत्र/सुगंध बनाना
5.	17-20	शिल्प एवं वास्तुकला	भवन निर्माण, धातु कर्म (Metallurgy) और आभूषणों की जड़ाई
6.	21-24	जादू एवं मनोरंजन	इंद्रजाल (जादूगरी), हस्तकौशल (Sleight of hand) और बच्चों के खेल
7.	25-28	पाक कला एवं बुनाई	नाना प्रकार के भोजन बनाना, सिलाई-कढ़ाई और कपड़े बुनना
8.	29-32	साहित्य एवं बौद्धिक	पहेलियाँ बूझना, काव्य रचना, और गुप्त भाषाएँ बनाना
9.	33-36	ज्योतिष एवं शकुन	शकुन-अपशकुन जानना और भविष्य कथन की विद्या
10.	37-40	युद्ध एवं कूटनीति	शस्त्र संचालन, व्यूह रचना और विजय प्राप्त करने की विद्या
11.	41-44	पशु-पक्षी प्रशिक्षण	जानवरों को सिखाना और पक्षियों की बोली समझना
12.	45-64	अन्य विविध कलाएँ	इनमें कूटनीति, औषधियाँ बनाना, वृक्षारोपण और रत्नों की परीक्षा शामिल हैं

श्री कृष्णा और सुदामा जी की भेंट महर्षि सांदीपनि आश्रम में हुई थी यहीं पर श्री कृष्णा, बलराम और सुदामा जी ने शिक्षा ग्रहण की थी और गुरु माता के आज्ञा से जंगल (नारायण धाम) में लकड़ी लेने गए। भारी बारिश के कारण दोनों पेड़ पर छुप कर बैठ गए और सुदामा जी ने भूख के कारण गुरु माता द्वारा दिए गए चने की पूरी पोटली खा ली थी। शिक्षा पश्चात श्री कृष्ण द्वारका आ गए और सुदामा जी गुजरात लौट गए। सांदीपनि आश्रम में कृष्ण और सुदामा की मूर्ति के सामने गुरु महर्षि संदीपनी की मूर्ति है जो अटूट मित्रता और गुरु शिष्य परंपरा को दर्शाती है। पौराणिक कथाओं के अनुसार गुरु सांदीपनि को दी गई गुरुदक्षिणा में पुत्र की अनिच्छावश मृत्यु हो जाती है। कृष्ण ने अपनी दिव्य शक्तियों का प्रयोग कर गुरु के पुत्र को पुनः जीवित किया। यह कथा गुरु-शिष्य परंपरा एवं गुरु-भक्ति की महत्ता को दर्शाती है।

अहोऽतुलं हि वः शौर्यं यत्कृष्णबलरामा।

यद्वै विद्महे तात तच्छ्रुतं तदधीतवान्। ।

चतुःषष्ट्या चतुःषष्ट्या विदितं च कलाः विभोः।

गुरुदक्षिणां दातुं सः गुरुमेव प्रपेदिरे। ।

आज भी उज्जैन में सांदीपनि आश्रम पर जनमाष्टमी तथा गुरु-पर्णिमा जैसे उत्सव बड़े धूमधाम से मनाए जाते हैं। स्थानीय लोगों का यह मानना है कि यह स्थान मात्र धार्मिक स्थल नहीं, बल्कि प्राचीन शिक्षा प्रणाली का जीता जागता उदाहरण है। इस प्रकार आश्रम ने सामाजिक संस्कृति और धार्मिक चेतना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

➢ **मूल्यांकन:-**

सांदीपनि आश्रम प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली का एक महत्वपूर्ण केंद्र था, जहाँ विद्यार्थी विभिन्न विषयों का अध्ययन करते थे। यह आश्रम भगवान कृष्ण और उनके मित्र सुदामा के गुरु सांदीपनि ऋषि द्वारा स्थापित किया गया था। सांदीपनि आश्रम में गुरुकुल प्रणाली का पालन किया जाता था, जहाँ विद्यार्थी अपने गुरु के साथ रहते थे और शिक्षा प्राप्त करते थे। यहाँ विद्यार्थी व्याकरण, तर्कशास्त्र, दर्शनशास्त्र, और अन्य विषयों का अध्ययन करते थे। सांदीपनि आश्रम में नैतिक शिक्षा पर विशेष जोर दिया जाता था, जहाँ विद्यार्थियों को सत्य, अहिंसा, और अनुशासन जैसे मूल्यों का पालन करना सिखाया जाता था।सांदीपनि आश्रम में शिक्षा केवल उच्च वर्ग के लोगों के लिए उपलब्ध थी, जो गरीब और वंचित वर्ग के लोगों के लिए पहुंच से बाहर थी। सांदीपनि आश्रम में अध्यात्मिकता पर

अधिक जोर दिया जाता था, जो व्यावहारिक शिक्षा के लिए कम महत्व देता था सांदीपनि आश्रम में गुरु-शिष्य परंपरा का पालन किया जाता था, जो कभी-कभी शिष्यों के लिए कठोर और अनुशासनहीन हो सकता था।

➢ निष्कर्ष :-

संदीपानि आश्रम न केवल एक पौराणिक कथा का स्थल है, बल्कि यह भारतीय गुरुकुल शिक्षा प्रणाली, गुरु-शिष्य परंपरा, सांस्कृतिक धरोहर और स्थानीय ऐतिहासिकता का संगम भी है। आधुनिकता की भागदौड़ में जहाँ शिक्षा केवल तकनीकी व व्यावसायिक होती जा रही है, वहाँ इस आश्रम की परंपरा हमें समग्र शिक्षा एवं जीवन मूल्यों का स्मरण दिलाती है।

➢ संदर्भ सूची

1. श्रीमद्भागवत पुराण, (गीताप्रेस गोरखपुर) दशम स्कंध. नंबर. 828
2. महाभारत (आदिपर्व) , गुरु-शिष्य परंपरा विवरण
3. उज्जैन जिला प्रशासन, सांदीपनि आश्रम , ऐतिहासिक विवरण
4. मुखर्जी, र. (2020). प्राचीन भारतीय शिक्षा. नई दिल्ली: भारतीय प्रकाशन, पेज 12-25.
5. शर्मा, आर. (2019). परीक्षा के लिए भारत में प्राचीन शिक्षा प्रणाली नोट्स. मुंबई: शिक्षा प्रकाशन, पेज 30-40.
6. कुमार, ए. (2018). प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली. चेन्नई: ज्ञान प्रकाशन, पेज 50-65.
7. सिंह, जे. (2022). प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली. दिल्ली: भारतीय शिक्षा प्रकाशन, पेज 20-35.
8. राधाकुमुद, म. (2015). Ancient Educational Institutions. कोलकाता: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, पेज 100-120.
9. गुप्ता, एस. (2021). आधुनिक समय में प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली की प्रासंगिकता. नई दिल्ली: शिक्षा प्रकाशन, पेज 40-55.
10. वेदमित्र, डी. (2016). भारतीय शिक्षा का इतिहास. मुंबई: भारतीय प्रकाशन, पेज 25-40.
11. थॉमस, एफ. (2017). प्राचीनकालीन भारतीय शिक्षा का सामान्य परिचय. चेन्नई: ज्ञान प्रकाशन, पेज 15-30.
12. व्यास, व. श्रीमद्भागवत पुराण. स्कंध 10, अध्याय 45, श्लोक 30-31.